# ‘कोलकाता हिंदी संवाद’ का गठन एवं संगोष्ठी

**कोलकाता, 17 फरवरी 2018**

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता में वाद-संवाद के पाक्षिक आयोजन के लिए **‘कोलकाता हिंदीसंवाद’** का गठन किया गया। सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. सुनील कुमार इसके संयोजक, प्रो. कृपाशंकर चौबे संरक्षक, प्रो. चंद्रकला पाण्डेय मुख्य मार्गदर्शक एवं डॉ. विवेक सिंह सलाहकार बनाए गए। चाँदनी कुमारी, संदीपदुबे एवं विनोद साव छात्र प्रतिनिधि मनोनीत हुए।

पहली संगोष्ठी के रूप में सत्यजीत रे निर्देशित फिल्म ‘सद्गति’ का प्रदर्शन एवं परिचर्चा का आयोजन किया गया। इसमें केंद्र के छात्रों-शोधार्थियों-प्राध्यापकों एवं अतिथि वक्ताओं ने ‘सद्गति’

कहानी एवं उसके सिनेमाई रूपांतरण पर विस्तार से चर्चा की। आरम्भ में संयोजक और केंद्र के कार्यकारी प्रभारी डॉ. सुनील कुमार ने इस संवाद श्रृंखला की जरूरत एवं इसके महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि इसका मूल उद्देश्य छात्रों-शोधार्थियों को सम-सामयिक मुद्दों से अवगत कराना तथा उनके अभिव्यक्ति कौशल का विकास करने के लिए विविध अवसर प्रदान करना है। शोधार्थी संदीप

दुबे ने साहित्य को सिनेमा में बदलने के लिए ज़रूरी पहलुओं के बारे में बताया। शोधार्थी मौसमी गुप्ता

ने फिल्म में दर्शायी गयी सामाजिक परिस्थितियों को उजागर किया। शोधार्थी चांदनी शाह ने फिल्म

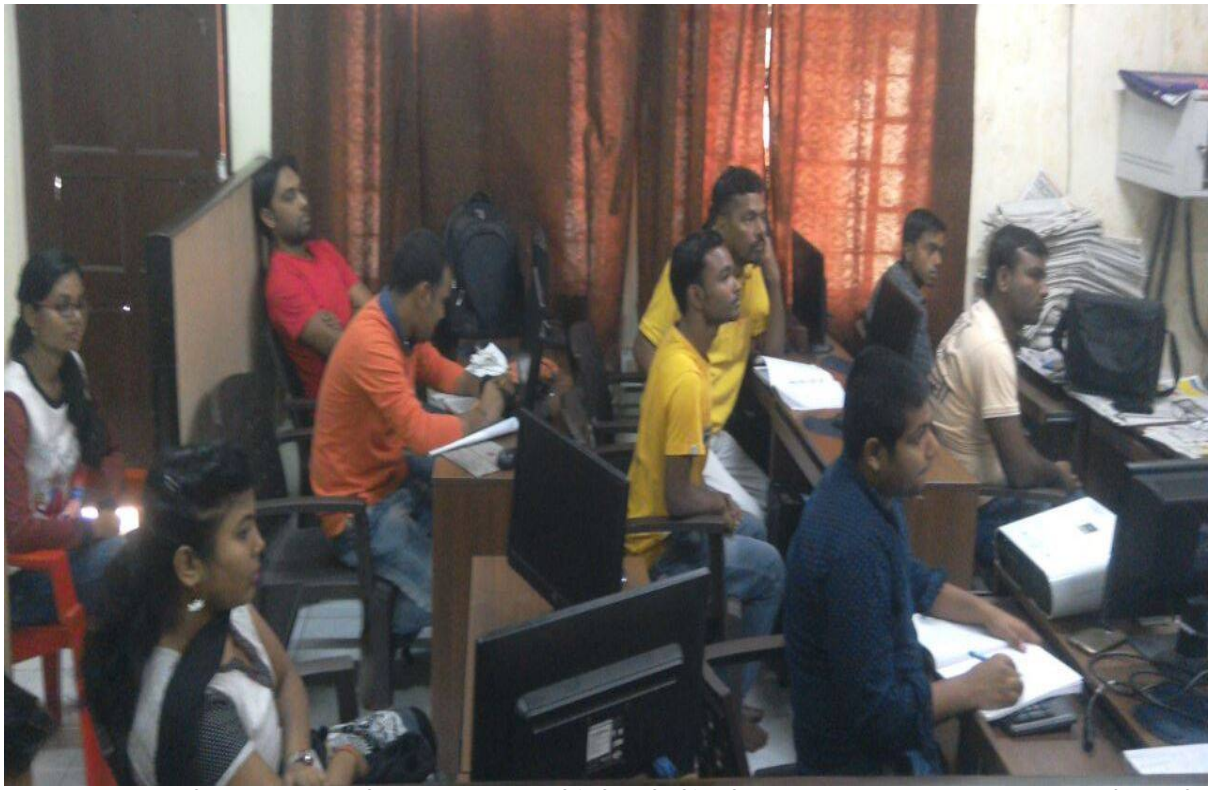

की समीक्षा करते हुए फिल्म के अन्य पहलुओं से लोगों को अवगत कराया। वही पूजा गौतम ने 'सद्गति' और 'संस्कार' उपन्यास की तुलना करते हुए जातिवाद को गम्भीर समस्या बताया। उमेश

शर्मा ने धार्मिक स्थलों पर होने वाले जातीय विभेद की चर्चा की। पंकज साव और विनोद साव ने शोषित वर्ग को साहसी बनने पर ज़ोर दिया और कहा कि युवा पीढी को ही अब जातिगत कट्टरता का

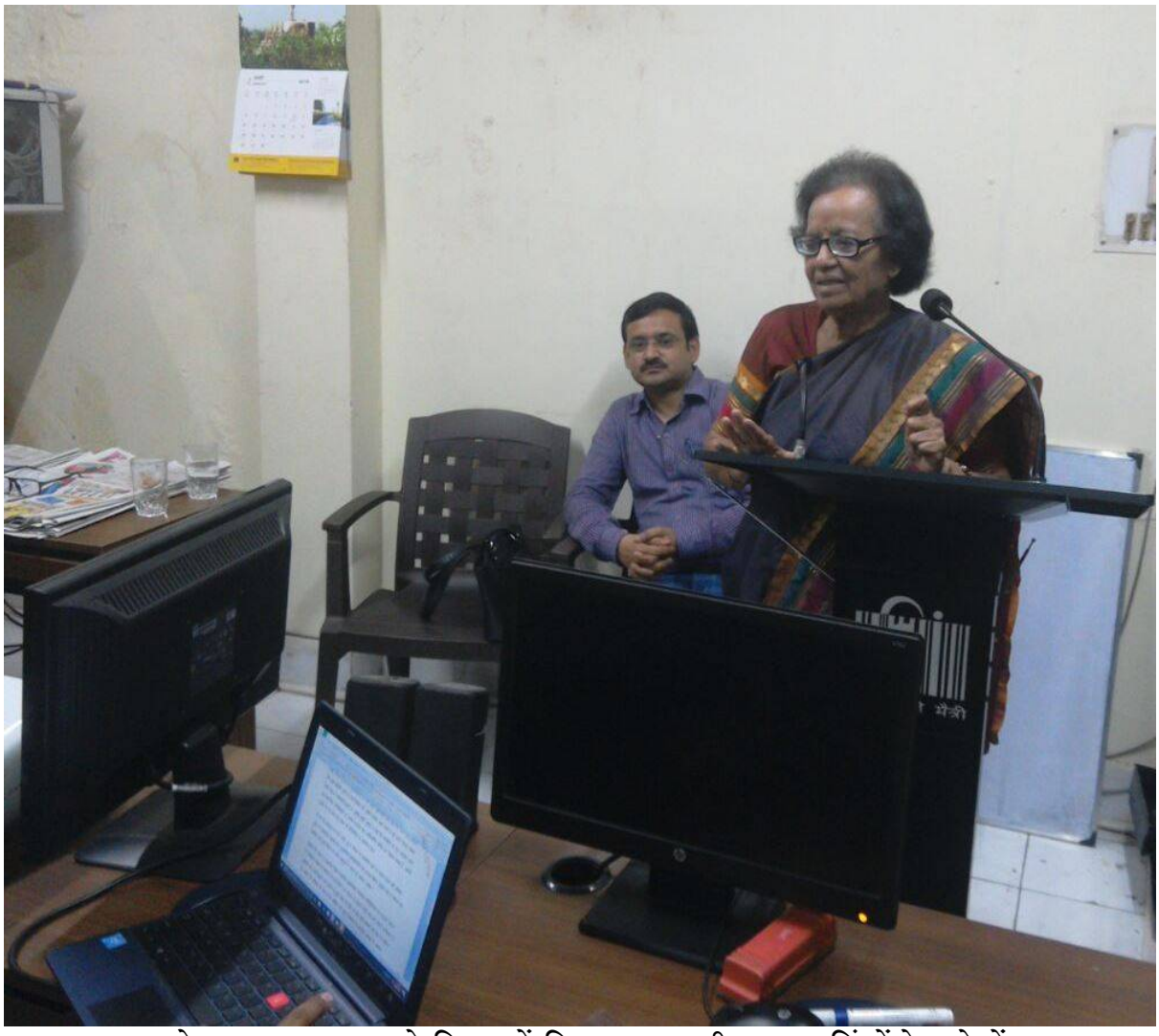

हल तलाशना होगा। । मृणाल राज ने फ़िल्म में दिखाए गए प्रतीकात्मक बिंबों के बारे में बताया। इस क्रम में विनीत सिन्हा, सागर साव, सुशील तिवारी सहित साहित्य और जनसंचार विभाग के विधार्थियों ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम के अंत में प्रो. चन्द्रकला पाण्डेय ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें फिल्म देखने का नज़रिया बदलना चाहिए। उन्होंने ऐसे आयोजनों को आज की सबसे बड़ी जरूरत बताया। धन्यवाद ज्ञापित करते हुए डॉ. विवेक सिंह ने कहा कि शोषण के मूल कारणों पर चोट जरूरी है।

मुंशी प्रेमचंद की कलम से निकली कहानी और सत्यजीत रे के सिनेमैटिक विज़न का परिणाम है

टेलिफ़िल्म 'सदगति'। देश के युवा, धर्म और जाति के नाम पर विभाजन को नकार रहे हैं।